आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

October 2025, Issue-130, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication** Published by **Gholap Archana Bapu** & Printed & published at Harshwardhan Publication, At.Post. Limbaganesh Dist,Beed - 431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**."

Harshwardhan Publication
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
vidyavarta@gmail.com vidyawarta@gmail.com
SCAN ME!
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

Printing Area



Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.









Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

13) Lasioptera asperae, LASIOPTERA MEIGEN (DIPTERA: CECIDOMYIIDAE.....
M.S.Siddiqui, Naigaon (Bz), Dist. Nanded **||78**

14) Corporate Social Responsibility in Global and Indian Contexts: Historical....
Vijay kumar, Uttam nagar, New delhi **||81**

15) Role of Securities and Exchange Board of India in Protecting.....
Dr. Md. Zafar Alam, Patna **||90**

16) Impact of Digital Payment Systems on E-commerce Growth....
Zeba Mehjabi, Bihar, Vaishali **||101**

17) तमस का मानवीय—अमानवीय पक्ष
डॉ. रमेश कुमार टण्डन, खरसिया, जिला— रायगढ़ (छ.ग.) **||112**

18) मैला आँचल में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति
सोनम कुमारी शर्मा, जयपुर **||115**

19) डॉ. राममनोहर लोहिया के सप्तक्रांति सिद्धांत की वर्तमान प्रासंगिकता
डॉ. सन्दीप कुमार सिंह, सुजीत कुमार यादव, प्रयागराज **||118**

20) मध्यकालीन भारत में सूफी परंपरा और उसका सामाजिक प्रभाव : एक अध्ययन
डॉ. नन्द किशोर सिंह, भागलपुर, बिहार **||123**

21) समग्र विकास के परिप्रेक्ष्य में गांधी अर्थशास्त्र
डॉ. अमित रंजन सिंह, भागलपुर, बिहार **||131**

22) छत्तीसगढ़ राज्य में बाल अपराधियों की विधिक स्थिति: रायपुर जिले के विशेष....
अभय प्रताप सिंह, डॉ. राजेश मणि त्रिपाठी, नया रायपुर (छ.ग.) **||139**

23) लैंगिक समानता एंव समावेशी विश्व : जी २० के संदर्भ में
डॉ. राजश्री सेठी, भीलवाड़ा, राजस्थान **||146**

24) मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले में पर्यटन और स्थानीय संस्कृति.....
ज्योति शर्मा, डॉ. दिनेश कुमार पाटीदार, करी, बड़वानी **||150**

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

17

तमस का मानवीय—अमानवीय पक्ष

डॉ. रमेश कुमार टण्डन
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास० महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महावि० खरसिया,
जिला —रायगढ़ (छ.ग.)

==========**********==========

१९४७ में भारत का विभाजन हुआ। इस कारण से देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए और मानवीय मूल्यों का विघटन हुआ। धार्मिक कट्टरता के कारण उपजी हिंसा के पीछे मुख्य हाथ किसी भारतीय धर्म — हिन्दू, मुस्लिम या सिक्ख का था या 'फूट डालो ओर राज करो' की नीति अपनाने वाली अंग्रेजी सरकार का था, का स्पष्ट उल्लेख १९७३ में प्रकाशित 'तमस' उपन्यास में साहनी जी करते हैं। तमस अर्थात् अंधेरा फैलाने वालों की नीति, तमस उपन्यास के माध्यम से यहाँ उजागर होती दिखायी देती है। मुम्बई के निकट भिवंडी नगर में तब हिन्दू—मुस्लिम दंगे हुए थे। उसके बाद ही लेखक भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया था। लिखते समय लेखक का ध्यान पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित रावलपिंडी के दंगों की ओर चला गया। फिर उन्होंने मात्र पाँच दिनों की घटना को जिस प्रकार लिखा, उसके आधार पर अनेक मानवीय और अमानवीय पक्ष उजागर होते हैं।

(१) मुस्लिमों ने हिन्दू और सिक्खों का सहयोग किया (मानवीय) —

एक मुस्लिम ने हिन्दू का सहयोग किया। शाहनवाज, रघुनाथ की पत्नी का जेवर लाते हैं और उन्हें अपनी मोटर से सुरक्षित स्थान पर छोड़ भी देते हैं। अन्य घटना में, एक मुस्लिम ने सिक्ख का सहयोग किया। करीमखान ने खंखारने के बहाने हरनाम सिंह और उसकी पत्नी बन्तो को जल्दी वहाँ से चले जाने के लिए कहा था। अन्य घटना — मुस्लिम महिला अकराँ की सास राजो ने सिक्ख हरनाम सिंह और बन्तो को आश्रय दिया था।

(२) मुस्लिमों ने हिन्दू और सिक्खों पर अत्याचार किया (अमानवीय) —

परन्तु शहनवाज ने मिल्खी को मार दिया, जो न पंजाबी था, न गढ़वाली था। अन्य घटना में, नूरदीन ने अपने २० — ३० साथियों के साथ इकबाल सिंह को उसकी इच्छा के विरूद्ध मुस्लिम बनाया। इकबाल के मुँह में मांस का बड़ा—सा टुकड़ा डाल दिया गया, जिसमें खून टपक रहा था। अन्य बड़ी घटना — एक हिन्दू लड़की एक छत से दूसरे छत पर जा रही थी, तभी नवी, लालू, मीरा, मुर्तजा आदि मुसलमानों ने उसे धर दबोचा और उसके मरते दम तक सामूहिक बलात्कार किया। अन्य घटना — पंडित की पुत्री प्रकाशो को अल्लाहरक्खा उठा ले गया। अन्य घटना — मेहरसिंह (छोटे ग्रंथी) संधि की बात करने के लिए गए थे, जिसे मूस्लिमों ने मार दिया। अन्य बड़ी घटना — तूर्कों के भय से २७ औरतें जिसमें जसवीर कौर, हरिसिंह की पत्नी, देवसिंह की पत्नी, प्रेमसिंह की पत्नी, ज्ञानसिंह की पत्नी आदि शामिल हैं, कुएँ में कूदकर जान दे दी।

(३) सिक्ख ने मुस्लिम की हत्या की (अमानवीय)

दूबले—पतले बलदेवसिंह ने बूढ़ा करीमबख्श का खून कर दिया।

(४) हिन्दू ने मुस्लिम की हत्या की (अमानवीय)

इन्द्र ने बुढ़े इत्रफरोश को मार दिया था।

(५) हिन्दू, मुस्लिम और सिक्ख तीनों शांति चाहते थे (मानवीय) —

गुरूद्वारे में सोहनसिंह ने मुसलमानों से अमन की बात करने के लिए कहा। मीरदाद भी मुसलमानों को समझा रहा था कि यह अंग्रेजों की चाल है हुकुमत करने की। देवदत्त ने अमन की बैठक के लिए सभी पार्टियों के लोगों का इकट्ठा किया था। यह फसाद को रोकना चाहता था।

(६) हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही स्वार्थी (मानवीय और अमानवीय दोनों) —

नूरइलाही और लाला लक्ष्मीनारायण दोनों ही सच्चे गहरे जज्बाती नहीं थे। दोनों में ही एक प्रकार की अनौपचारिकता थी, जो अधिक उम्र के स्वार्थी पुरुषों में

आ जाती है। दोनों के भीतर वैमनस्य भी था, घृणा भी थी। दोनों व्यापारी होने के कारण व्यवहार कुशल थे और एक–दूसरे की जरूरत को समझते थे।

(७) अंग्रेजी सरकार की नीति (अमानवीय) –

एक मुस्लिम (मुराद अली) के कहने पर एक हिन्दू (नत्थू) ने सलोत्तरी साहब के लिए सुअर को काटा था। सलोत्तरी साहब का तात्पर्य पशु चिकित्सक होता है, जो कोई अंग्रेज ही हो सकता है। इस प्रकार एक अंग्रेज ने अपने फायदे के लिए एक मुस्लिम के द्वारा एक हिन्दू से मुस्लिम पूजनीय सुअर को कटवाया और मस्जिद के सामने लाश को बोरे में भरकर रखवाया, जिससे साम्प्रदायिक दंगे हो। अंग्रेज अफसरों की यही नीति थी कि हिन्दुस्तान में धार्मिक दंगे कराकर अधिक समय तक राज किया जाए। उन्होंने इसे फूट डालो और राज करो की नीति का नाम दिया। यदि अंग्रेज अधिकारी चाहते तो दंगे के दौरान एक सरकारी हेलिकॉप्टर आसमान में उड़ा देते। परन्तु यही तो अंग्रेज नहीं चाहते थे। उपन्यास में ज्यादातर मुस्लिमों ने सिक्खों पर अत्याचार किया है। अंग्रेजी सरकार ने कत्ल होने दिया, दंगे में शहर जलने दिया, लोगों को मरने दिया, सिक्ख की पत्नियों को कुएँ में मरने दिया उसके बाद हवाई सर्वे हुआ। यही तो उनकी नीति थी। अंत में शांति स्थापित की, परन्तु सभी कुछ खतम होने के बाद।

अंत में, अमन के लिए माइक्रोफोन पकड़कर लाउडस्पीकर पर नारे लगाने वाला नत्थू ही होता, परन्तु वह मर चुका था; इसलिए वह मुराद अली था। वही मुराद अली, जिसने सुअर को एक हिन्दू से कटवाया। एक अंग्रेज के लिए अपने ही धर्म के पूजनीय सुअर को हिन्दू से कटवाकर अंग्रेजों की नीति का शिकार हुआ और अपने ही भाइयों – हिन्दू और सिक्खों से लड़े–मरे।

उपन्यास के मानवीय और अमानवीय पक्ष का विस्तार –

उपन्यास की कथावस्तु के दो भाग हैं, जिनके अध्ययन करने पर अनेक किरदारों के माध्यम से मानवीय और अमानवीय पक्ष नजर आता है। शुरूआत में ही अमानवीय पक्ष दिखायी देता है। जरनैल ही एक ऐसा आदमी था, जो आन्दोलन हो या न हो, जेल जाता रहता था। हर आए दिन शहर में कहीं–न–कहीं उसकी पिटायी हो जाया करती थी।

अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड के सम्बन्ध में, प्रातः पहाड़ियों से घूमकर आने के बाद अपने कमरे में लगाए गए मूर्तियों को दिखाते हुए रिचर्ड लीजा को कह रहा था, ''बंगले के बाहर होता हूँ, तो हिन्दुस्तान के किसी शहर में होता हूँ। बंगले में लौटता हूँ, तो पूरे हिन्दुस्तान में लौट आता हूँ।'' (१) बंगले में रिचर्ड के द्वारा बुद्ध की मूर्ति को दिखाने के दौरान लीजा कहती है, ''ये आदमी लोग कितने अजीब होते हैं, कितना रस ले–लेकर पत्थरों और खण्डहरों के बारे में बातें करते रहते हैं। कोई स्त्री इन बातों के बारे में जानते हुए भी इतना चहकेगी नहीं, इतनी डींग नहीं मारेगी।'' (२) अनेक भूमिकाओं के संबंध में रिचर्ड के विचार ''हमारा आचरण, हमारी मान्यताओं के अनुरूप होना चाहिए। एक ऐसा भोंडा आदर्शवाद है, जिससे सिविल सर्विस में नाम लिखाते ही अफसर अपना पिंड छुड़ा लेता है।'' (३) डायनिंग रूम में चर्चा के दौरान रिचर्ड ने लीजा को बताया कि ''सभी हिन्दुस्तानी चिड़चिड़े मिजाज के होते हैं, छोटे–से उकसाव पर भड़क उठने वाले, धर्म के नाम पर खून करने वाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं, औरकृ और सभी सफेद चमड़ेवाली औरतों को पसन्द करते हैं।'' (४) पुनः, रिचर्ड के अनुसार, ''हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते, प्रजा में कौन – सी समानता पायी जाती है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन – किन बातों में एक – दूसरे से अलग हैं ?'' (५) लीजा के बंगले के बरामदे में बाबू चिट्ठियाँ छांटने का काम कर रहा था। लीजा ने उसे देखकर कहा, ''यू हिंडू, बाबू ? कृ परन्तु वह दुविधा में पड़ गई कि किस आधार पर कहा था कि वह हिन्दू है। कौन – से चिन्ह होते हैं, जिनसे एक हिन्दू को पहचाना जाता है।'' (६) रात में शिवालय का घड़ियाल बजा। अल्लाह – हो – अकबर की आवाज आई। लीजा, रिचर्ड से कुछ बातें करके सोचने लगी, ''उसे लगा, मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं होता, वास्तव में महत्त्व केवल शासकीय मूल्यों का होता है।'' (७) लीजा नशे में रिचर्ड से कहती है कि शहर में

अनाज की मंडी जल गई है और देहात में १०३ गाँव जल गए हैं ''इतने गाँव तो जल गए रिचर्ड, अभी भी तुम्हें काम है ? अब तुम्हें और क्या काम करना है?'' (८)

भीष्म साहनी जी तमस में विविध पात्रों के माध्यम से मानवीय पक्षों का बेबाकी से उद्घाटन करते हैं। साप्ताहिक सत्संग की समाप्ति के बाद मंदिर से लोग बाहर निकले और बरामदे में अपना—अपना जूता पहनकर पहनने लगे। ''कुछ लोग मन्दिर में प्रवेश करते समय जान—बूझकर दाएँ पैर का जूता एक दरवाजे के सामने और बाएँ पैर का जूता तीसरे या चौथे दरवाजे के सामने छोड़ देते थे ताकि सत्संग के बाद जूतों का पुन: मिल जाना सुनिश्चत हो सके।'' (९) सुअर को मारने क बाद नत्थू के मन में विचार उठने लगे, ''दुख से छुटकारा पाने के लिए आदमी सबसे पहले औरत (पत्नी) की तरफ ही मुड़ता है।'' (१०) नत्थू सुअर को मारकर घर आता है। उसकी पत्नी की जैसे जान—में—जान आई, आँसू छलक आए। अपनी पत्नी के बारे में नत्थू सोचता है, ''कुछ लोगों में स्वभाव से ही ऐसी सूझ होती है कि वे अपनी स्थिति को भली—भाँति समझ लेते हैं और जिंदगी में कुछ भी ऐसा नहीं मांगते जिसके मिलने की सम्भावना न हो। इसलिए उनका मन सदा खिला—खिला रहता है।'' (११) नत्थू ने घर पहुँचकर रात की घटना का जिक्र अपनी पत्नी से नहीं किया। पत्नी ने भी जिद नहीं की। ''चुप रहूँगी तो कुछ दिन बाद अपने आप बता देगा।'' (१२) मंडी में आग लगने के बाद लक्ष्मीनारायण छत पर टहल रहे थे। पुत्र रणवीर घर पर नहीं है। लाला लक्ष्मीनारायण, पुत्र रणवीर के बारे में सोचता है, ''जिसे अपने माँ—बाप की चिंता नहीं, वह समाज सेवा क्या करेगा ?'' (१३) लक्ष्मीनारायण, इसके परिवार और पास—पड़ोस के घरों के लोगों ने बचाओ की आवाज सुनी। लक्ष्मीनारायण ने इस आवाज से अपने बेटे की आवाज को पहचानने की कोशिश की, ''भयाकुल, भागते हुए लोग सभी एक जैसी ही आवाज से पुकारते हैं।'' (१४) मास्टरजी ने कहा था कि ''अपने शत्रु की ओर ध्यान से कभी नहीं देखो, इससे निश्चय डगमगाने लगता है। किसी भी जीव की ओर ध्यान से देखो तो उसके प्रति दिल में सहानुभूति पैदा होने लगती है। ऐसा कभी नहीं होने देना चाहिए।'' (१५) इत्र बेचने वाला अनजान भारी भरकम शरीर वाला आदमी सामान लटकाए उस गली से गुजर रहा था। रणवीर और उनके साथियों ने उसे मारने के लिए सोचा, ''कुछ सवालों का जवाब मस्तिश्क नहीं देता, अन्त:प्रेरणा देती है।'' (१६) इन्द्र, उस इत्र वाले के पीछे हो लिया। वह आदमी इन्द्र से कह रहा था, ''दुकानदार घर पर बैठा रहे तो खाएगा कहाँ से ?'' (१७) इत्रफरोश बोले जा रहा था, ''जिस मर्द की दो बीवियाँ हों, वह जरूर इत्र लेता है, वह वसमा भी लेगा और सुरमा भी लेगा। वह मर्द भी इत्र खरीदता है जो उम्र में बड़ा हो और जिसकी जवान बीवी हो।'' (१८) उपन्यास के भाग दो में वर्णित घटना के दृष्टिगत, हरनामसिंह की पत्नी बन्तो खानपुर जाने की बात करती है। परन्तु हरनामसिंह चलती दुकान को छोड़कर नहीं जाना चाहते। वह तर्क करता है, बन्तो चुप हो जाती है। ''तर्क का जवाब तो तर्क में दिया जा सकता है, पर विश्वास का जवाब तर्क के पास नहीं है।'' (१९) दोनों बलवाइयों के डर से घर छोड़कर नाले के साथ—साथ चल रहे थे। ''दीवारें मनुश्य को छिपाए रहती हैं, पर यहाँ कोई दीवार न थी।'' (२०) एक सरदार आंकड़ा वाले बाबू के कान में आकर कहता है। उसकी पत्नी कुएँ में डूब मरी है। पाँच—पाँच तोले का कड़ा और गले में सोने की जंजीरी पहनी है। उसे चुपचाप निकाल लेने की बात कहता है। बाबू को भी कुछ देना चाहता है, मुँह मीठा कराना चाहता है। सरदार बोला, ''काम करने की नीयत हो, तो सब कुछ हो सकता है।'' (२१) धर्म और युद्ध पर भी भीश्म जी ने तमस में लिखा है। शहर के कई नेता दंगे को रोकवाने डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड के पास गए थे। संतुष्टिपूर्वक कार्यवाही की उम्मीद न मिलते देख एवं बाहर बगीचे में एक हिन्दू के कत्ल की खबर सुनकर सभी अलग—अलग वापस होने लगे। रास्ते में टांगे में बैठे बख्शी के बारे में, ''भावनाओं के रेले के सामने सभी कुछ ढह जाता है।'' (२२) अलग—अलग चलते हुए हकीम अब्दुलगनी, सरदार बिशन सिंह, लक्ष्मीनारायण, मौलादाद एक हो गए। मौलादाद, हकीम जी को देखते ही तिलमिला उठा — ''मुसलमान का दुश्मन वह मुसलमान है जो दुम हिलाता हिन्दुओं के पीछे—पीछे जाता है, उनके

टुकड़ा पर पलता है।'' (२३) कई लाशें गिर चुकी थीं। जरनैल भी मर चुका था। रणवीर अपने साथियों के साथ है। शहस्त्रागार में टहलते हुए, ''स्थिति को पहचान लेना, उसकी तह तक जा पहुँचना और तत्परता से निर्णय कर लेना नेता के लिए अनिवार्य था।'' (२४) रणवीर अपने तीन साथी योद्धाओं के साथ था। इन्द्र से एक बार फिर पैंतरा दिखाने के लिए कहा। रणवीर ने कहा — ''अगर तुम भीड़ में शत्रु पर वार करते हो, तो छूरा बाहर खींचने की कोशिश नहीं करो, उसे वहीं रहने दो और भीड़ में खो जाओ।'' (२५)

संदर्भ :—

१. भीष्म साहनी, तमस; राजकमल पेपर बैक्स, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १ — बी, नेताजी सुभाश मार्ग नई दिल्ली ११०००२, पृष्ठ क्र. ४६—४७
२. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ४७
३. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ४८
४. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ५१
५. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ५२
६. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १०३
७. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १३३
८. तदैव ——— पृष्ठ क्र. २७७
९. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ७१
१०. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ११६
११. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १२५—१२६
१२. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १२६
१३. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १३९
१४. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १४४
१५. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १७६
१६. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १७८
१७. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १७९
१८. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १८०
१९. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १९७
२०. तदैव ——— पृष्ठ क्र. २०४
२१. तदैव ——— पृष्ठ क्र. २८७
२२. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ९५
२३. तदैव ——— पृष्ठ क्र. ९८
२४. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १७२
२५. तदैव ——— पृष्ठ क्र. १७५

18

मैला आँचल में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति

सोनम कुमारी शर्मा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

****

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति समाज धर्म प्रधान एवं आध्यात्मिक होने के कारण दार्शनिक आवरण से आवश्त है। संस्कृति में विविधता, एकता और दूसरों से प्रतिक्षण, प्रतिपल परम्परा अलग दिखने की लालसा है। इसी कड़ी में आंचलिक उपन्यास के सर्वश्रेष्ठ शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु ने मैला आँचल में समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, ग्रामीण एवं शहरी परिवेश समाज में व्याप्त अनाचार, धर्म के नाम पर बाह्य, आडंबर और विद्रूपताओं को उजागर किया है।

'मैला आँचल' ग्रामीण जीवन और आंचलिक संस्कृति का महाकाव्य है। मेरीगंज गाँव के इर्द—गिर्द यह घूमता है लेकिन इस उपन्यास के माध्यम से हर गाँव की कहानी व्यक्त करता हुआ उपन्यास है।

गाँधीजी के अहिंसा और सत्य जैसे मूल्यों का ग्रामीण जीवन में इतना महत्व है कि बालदेव कुश्ती के खेल को खेलने का विरोध करता है आगे चलकर वही मठ छोड़कर लक्ष्मी के प्रति आकर्षित होता हैं। लक्ष्मी भी बालदेव के ऊपर अपना सब कुछ छोड़ देती है। रेणु ने लिखा है—

रच्छ करो बालदेव! तुम कह दो एक बार — तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा। तुम बोलो — चन्दनपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बालदेव। दुहाई।

मैला आँचल में लक्ष्मी के माध्यम से भारत माता की वाणी को प्रकट किया है। भारत माता की